B.Ed. 2nd Year **Dr. Amod Kumar Sinha**
Session – 2018-2020 (Assistant Professor)
Subject – Pedagogy of History **Department of Education**
Course – 7 (B) /Unit – 2(d) **A.N.D.College,**
Topic – राजस्थान के वर्तमान इतिहास–पाठ्यक्रम की आलोचनात्मक समीक्षा Shahpur Patory
Critical Appraisal of Existing History-Curriculum in Rajasthan Samastipur
Lecture No. - 51

Continued from the previous class....

8. **जीवन की यथार्थता से दूर** – व्यक्ति एवं समाज दोनों के लिए यह आवश्यक है कि उनमें जीवन की यथार्थता से संघर्ष करने की व उससे समायोजन करने की योग्यता, क्षमता, एवं कौशल प्राप्त हो। आज बालकों को शरीर , मानसिक क्षमताओं की क्रियाविधि, वार्तालाप करने, चिन्तन करने, सृजन करने, सही-आचरण करने, आत्मज्ञान, आत्मसंयम, योजन व उसकी क्रियान्विति, जीवन के उद्देश्यों आदि का कोई ज्ञान नहीं है। व्यक्ति कर्म , उद्देश्य, लक्ष्य, साधन, कर्त्तव्य आदि जैसे मूल प्रश्नों का समुचित उत्तर इस पाठ्यक्रम में नहीं है।

9. **सृजन शक्ति के विकास में असहायक या मात्र परीक्षा प्रधान** – सभ्यता और संस्कृति के विकास, अवकाश का सदुपयोग, सर्वांगीण विकास और सफल जीवन के लिए व्यावहारिक ज्ञान एवं सृजन शक्ति का विकास आवश्यक है। राजस्थान बोर्ड द्वारा निर्मित पाठ्यक्रम इस प्रयास में मौन है। यह मात्र एक सैद्धांतिक पाठ्यक्रम बनकर रह गया है। परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद भी बालक अपने व्यावहारिक जीवन की समस्याओं को हल करने एवं सृजन करने में स्वयं को अक्षम पाते हैं।

10. **आदर्श नागरिकों के निर्माण में असफल** – प्रजातंत्र की सफलता के लिए आदर्श नागिरकों का निर्माण आवश्यक है। बालकों में जागरूकता , समानता, कानूनों व कर्त्तव्य का पालन, निष्पक्ष मतदान आदि गुणों का विकास होना चाहिए। किन्तु वर्तमान युग के बालकों में न तो ये गुण परिलक्षित होते हैं और न ही अध्यापकों में इन गुणों के विकास की दक्षता दृष्टिगोचर होती है।

11. **व्यक्तिगत विभिन्नता के सिद्धांत का अभाव** – ज्ञान की सफल प्रस्तुति के लिए यह आवश्यक है कि पाठ्यक्रम बालक के आयु ,बौद्धिक स्तर, रूचि, क्षमता, योग्यता आदि के अनुकूल हो। वर्तमान पाठ्यक्रम इस दृष्टि से असंगत प्रतीत होता है। पाठ्यक्रम में शामिल प्रकरण असंगठित, अनुपयोगी, असमन्वित एवं अरूचिपूर्ण है। यही कारण है कि पाठ्यक्रम में बालकों के मानसिक विकास , ज्ञान आदि के उद्देश्य अपूर्ण हैं।

12. **केवल मानसिक विकास में सहायक** – बालक के सर्वांगीण विकास हेतु यह आवश्यक है कि मानसिक विकास के साथ-साथ उनके चरित्र एवं व्यक्तित्व का भी विकास हो। इस पाठ्यक्रम में बालकों के चरित्र एवं व्यक्तित्व के विकास पर ध्यान नहीं दिया गया है। मानसिक पक्ष से भी यह पाठ्यक्रम स्मृति के विकास में सहायक है न कि बोध के विकास में।

13. **सामाजिक क्षमता के विकास मे असफल** – किसी सफल समाज के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति में सामाजिक संरचना के अनुरूप समायोजन करने हतु उसमें सामाजिक क्षमताओं, योग्यताओं व कुशलताओं का विकास हो। इस दृष्टि से यह पाठ्यक्रम व्यावहारिक प्रतीत नहीं होता है। यही कारण है कि आज हर तरफ दूषित आचरण, ईर्ष्या, घृणा आदि असामाजिक लक्षण दिखते हैं।

14. **परस्पर निर्भरता एवं राष्ट्र-प्रेम की भावना के विकास में असफल** – किसी भी राष्ट्र की शान्ति, स्थायित्व, एवं प्रगति के लिए यह आवश्यक है कि नागरिकों में परस्पर निर्भरता एवं राष्ट्रीयता की भावना हो। यह इसलिए आवश्यक है कि राष्ट्र के विकास का व्यक्ति एवं समाज से सीधा संबंध है। एक का प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव दूसरे पर शीघ्र या देरी से दूसरे पर पड़ता है। वर्तमान पाठ्यक्रम में प्रकरणों में संबद्धता, क्रम, प्ररणात्मक चरित्रों की कमी के कारण राष्ट्र-प्रेम, उदार राष्ट्रीयता, एवं राष्ट्रीय विकास के लक्ष्य अपूर्ण रह गए हैं।

समाप्त